IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

देहरादून जनपद में जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विधार्थियों में पर्यावरण की जागरुकता एवं अभिवृत्ति का एक अध्ययन

श्री गिरीश चन्द्र तिवारी
सहायक प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)
हे.न.ब.गढवाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय
डा0 बी0जी0आर परिसर
पौडी गढवाल।

डा0 कृपाल सिंह
सहायक प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)
हे.न.ब.गढवाल (केन्द्रीय) विश्वविद्याल
डा0 बी0जी0आर परिसर
पौडी गढवाल।

सारांश

शिक्षा के स्वरूप में पर्यावरण की शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। पर्यावरण की शिक्षा समूची शिक्षा प्रणाली की रीढ की हड्डी के समान है। पर्यावरण शिक्षा राष्ट्र के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालती है। यह शिक्षा उन नवयुवकों को शिक्षित करती है जो देश के निर्माण तथा विकास में प्रभावशाली हो सके। ऐसी स्थिति में माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की भूमिका के निर्वाह की अनिवार्यता स्वतः ही सुस्पष्ट हो जाती है। विधार्थियों की भूमिका का निर्वाह प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से उनके पर्यावरण के प्रति जागरुकता एवं अभिवृत्ति पर निर्भर करता है।

प्रस्तुत शोध पत्र "देहरादून जनपद में जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विधार्थियों में पर्यावरण की जागरुकता एवं अभिवृत्ति का एक अध्ययन" शोध किया गया है। देहरादून जनपद में विधार्थियों में पर्यावरण जागरुकता जानने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के लिए चयनित 100 छात्र एवं 100 छात्राएँ कक्षा 9वीं एवं 10वीं सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों से लिये गये। इसमें पर्यावरण जागरुकता मापन के लिए डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित Awareness Ability Measure एवं पर्यावरण अभिवृत्ति मापन के लिये डॉ. श्रीमती हसीन ताज, बंगलौर द्वारा तैयार की गई मापनी का प्रयोग किया गया है।

विशिष्ट शब्दः माध्यमिक शिक्षा, पर्यावरण जागरुकता एवं अभिवृत्ति, सरकारी व गैर सरकारी निजी विद्यालय।

प्रस्तावना –

समाज तथा शिक्षा–पद्धति दोनों में ही विधार्थियों का महत्वपूर्ण केन्द्र विन्दु होता है। शैक्षिक कार्यक्रमों की सफलता विधार्थियों के उचित व्यवहार, कुशल कार्यप्रणाली एवं योग्यताओं पर निर्भर करती है।

आज के नयी पीढी को सामाजिक तत्वों की जानकारी ले कर स्वमं के दृष्टिकोण को अधिक जागृत कर सकता है। शिक्षण केवल सम्बन्धित विषय में अर्जित ज्ञान एवं अध्यापन की कुशलता का ही प्रतिफल नहीं है, क्योंकि

यह एक यांत्रिक प्रक्रिया मात्र नहीं है। विधार्थियों को पर्यावरण शिक्षा तथा उसकी अभिवृत्ति, का छात्रों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। विधार्थि अपने शिक्षण कार्य को समर्पित भाव से करें तो वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति सरलता से की जा सकती है।

किसी भी कार्य को करने में व्यक्ति की अभिवृत्ति का प्रमुख स्थान होता है, क्योंकि यदि व्यक्ति की अभिवृत्ति सकारात्मक होती है तो अच्छे निष्कर्ष प्राप्त होते है और यदि अभिवृत्ति नकारात्मक है तो निष्कर्ष अच्छे प्राप्त नहीं हो सकते है। व्यक्ति जो कार्य करता है, उसके प्रति उसकी तीव्र सकारात्मक अभिवृत्ति उसके कार्य की गुणवत्ता को उच्च बना देती है। इसके विपरीत यह बात भी सत्य है कि अपने कार्य के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति उस कार्य की गुणवत्ता को निम्न बना देती है। अतः यह जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है कि विधार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है अथवा नकारात्मक। इसके साथ उनकी शिक्षण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति जागृत करके उनका ध्यान शिक्षण के प्रति आकृष्ट किया जा सकता है। इस अध्ययन में अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन इस आशा एवं विश्वास के साथ किया जा रहा है कि शोध के निष्कर्ष शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न अभिकरणों के लिए उपयोगी होगें।

पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में पूर्व में काफी शोधकार्य किये गये है। पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा, बी.एल. एवं सक्सेना, वी.एम. (1997)1, हसन, एस. (1993)2, अग्रवाल (1993)3, चन्द्रा (1985) ने पर्यावरण से सम्बन्धि कार्य किये है, जिनमें से निष्कर्ष निम्नानुसार है–

1. शोध न्यादर्श हेतु चयन किए गए छात्रों में अधिकतर छात्रों का जल प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण के कारणों की जानकारी है।
2. पर्यावरण शिक्षा हेतु कम्प्यूटर पर आधारित अनुदेशात्मक सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।
3. विद्यालयों में आयोजित किए गए राष्ट्रीय हरित कोर एवं हरियाली महोत्सव कार्यक्रमों से पर्यावरण संरक्षण में छात्रों की जागरुकता वृद्धि हुई है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. पर्यावरण के मुख्य आयामों के प्रति अनुकूल अभिवृत्तियों तथा उनके मूल्यों का विकास करना।
2. देहरादून जनपद में शासकीय एवं अशासकीय छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरुकता की तुलना करना।
3. देहरादून जनपद में छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता की तुलना करना।
4. देहरादून जनपद में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय अभिवृत्ति की तुलना करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

1. जौनसारी जनजाति के माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. जौनसारी जनजाति के माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. जौनसारी जनजाति के माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन का परिसीमनः प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र देहरादून जिले की परिसीमा तक सीमित हैं।

न्यादर्श चयनः देहरादून जनपद के 8 विद्यालयों से कक्षा 09 एवं 10वीं के 200 छात्र–छात्राओं का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा किया गया है।

शोध उपकरण.– विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता का मापन करना है ? इसके लिए डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित EnvironmentAwareness Ability Measure का उपयोग किया गया है। पर्यावरण की अभिवृत्ति का मापन करने के लिए डॉ. श्रीमती हसीन ताज, बंगलौर द्वारा तैयार की गई पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या– प्रदत्तों के विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या– शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया गया, जो निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 1:

जौनसारी जनजाति के माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

क्र0स	न्यादर्श में चयनित	N	M	मानक विचलन	t मान
1	छात्र	100	20.526	3.513	0-241
2	छात्राएं	100	20.478	3.249	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि जौनसारी जनजाति के माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता का सांख्यिकीय विष्लेषण किया गया है। सांख्यिकी

विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के छात्रों का औसत उपलब्धि 20.526 तथा मानक विचलन 3.53 है तथा छात्राओं का औसत उपलब्धि 20.478 तथा मानक विचलन 3.249 है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't ' का मान 0.241 है।

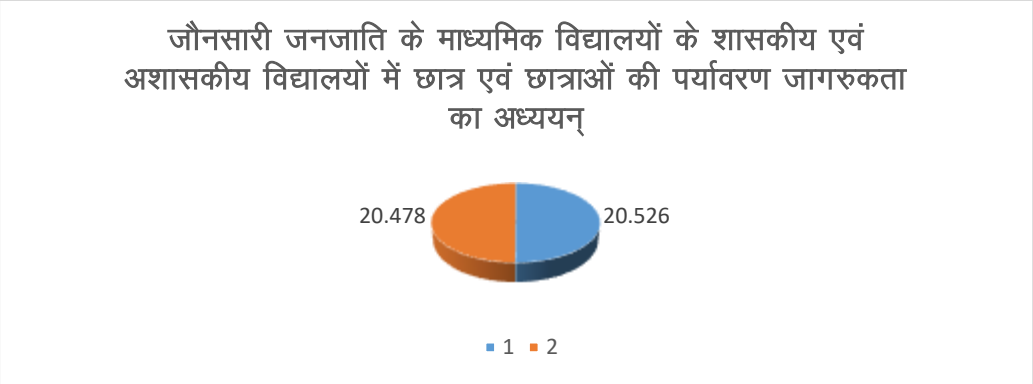

0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 0.241 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

सारणी क्रमांक 2.

जौनसारी जनजाति के माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्र की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

क्र0स	न्यादर्श में चयनित	N	M	मानक विचलन	t मान
1	शासकीय	25	174.87	14.11	
2	अशासकीय	25	173.83	14.10	0-231

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्रों की पर्यावरण अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विष्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के छात्रों का औसत उपलब्धि 174.87 तथा मानक विचलन 14.11 है तथा अशासकीय विद्यालयों के छात्रों का औसत उपलब्धि 173.83 तथा मानक विचलन 14.10 है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान 0.231 है।

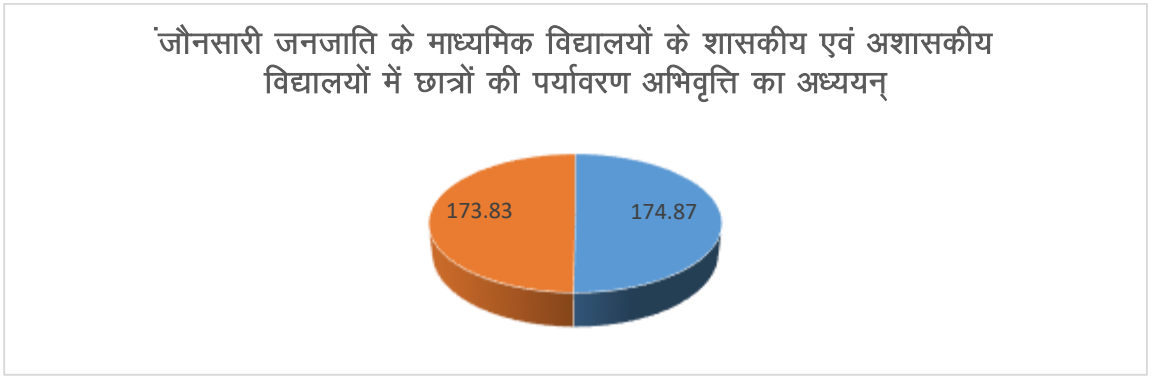

सारणी क्रमांक 3.

जौनसारी जनजाति के माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

क्र0स	न्यादर्श में चयनित	N	M	मानक विचलन	t मान
1	शासकीय	25	167.56	13.25	0-251
2	अशासकीय	25	174.21	12.02	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विष्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के छात्राओं का औसत उपलब्धि 167.56 तथा मानक विचलन 13.25 है तथा अशासकीय विद्यालयों के छात्राओं का औसत उपलब्धि 174.21 तथा मानक विचलन 12.02 है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना श्जश परीक्षण के द्वारा की गई है।

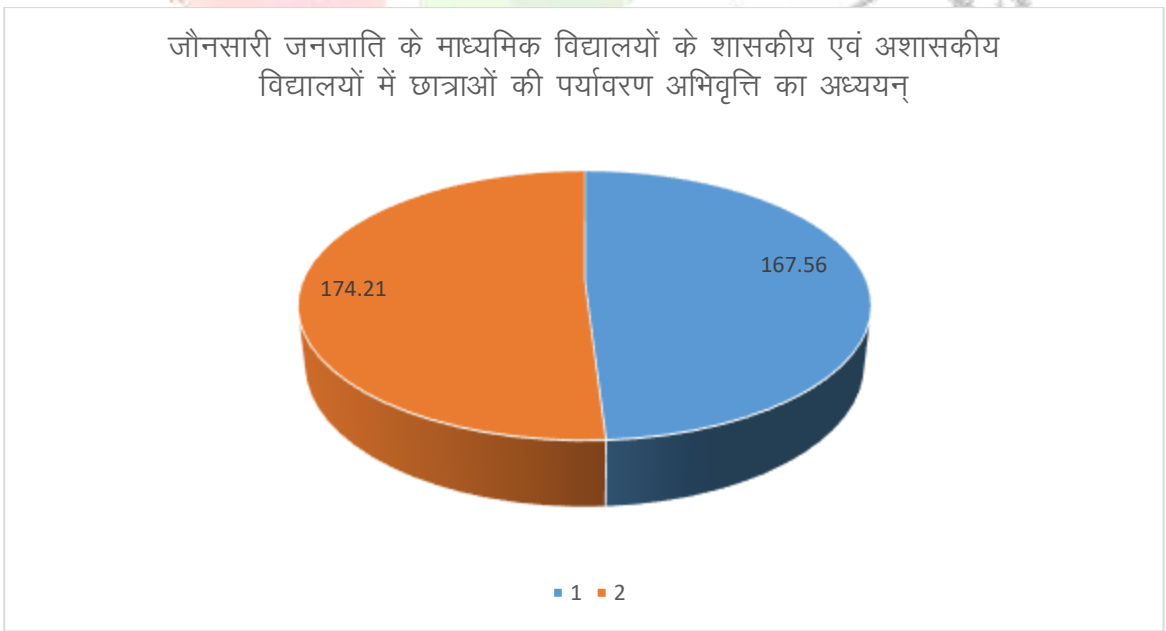

गणना से प्राप्त 't' का मान 2.51 है। 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि सारणी क्रमांक 2 व 3 के गणना से प्राप्त 't' का मान 0. 231 व 2.51 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि जनपद देहरादून के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नही है। कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले छात्रों एवं छात्राओं जो शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पढ़ते है पर्यावरण अभिवृत्ति में 0.01 स्तर पर अंतर होता है, शेष परिस्थितियों में भी पर्यावरण जागरुकता तथा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

संदर्भ

1. शर्मा बी.एल सक्सेना वी.एम. – पर्यावरण शिक्षा, मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन, 1997ए 1–2.

2. हसन एस. – बंगलादेश में पर्यावरण एवं औपचारिकेतर शिक्षाः औपचारिकेतर प्रथामिक शिक्षा के क्रियात्मक प्लान. नई दिल्लीः भारतीय पर्यावरण सोसाइटी 1993.

3. अग्रवाल पी.के. – पर्यावरण एवं नदी प्रदूषण, आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1993.

4. चन्द्रा संस – पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य, आर्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1985.

5. गोयल एम.के. – पर्यावरण शिक्षा, विनोद मंदिर, आगरा, 2005.

6. पाण्डेय नीरज – रीवा जिले में माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं में पर्यावरणीय जागरुकता का अध्ययन,

7 पाठक, पी0डी0.,(1974). भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर.

रामचन्द्रन,

8 शर्मा, आर0 ए0.,(2009). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ : आर 0 लाल बुक डिपो.

09 सिंह, आर.पी. एंड दास, एम.(1989). एट्टीट्यूड़ ऑफ टीचर टूवार्ड क्रीयेटिव लर्निंग एंड टीचिंग. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, वाल्यूम. 24(2):120–23. इन फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च 1988–92. वाल्यूम(2), नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी. पृष्ठ–1488.

10 श्रीनिवासन, वी.(1992). पर्सेनालिटी ट्रेट्स ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स एंड दीयर एट्टीट्यूड़ टूवार्ड टीचिंग. फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च 1988–92. वाल्यूम(2), नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी. पृष्ठ –1491.

11 तपोधन, एच.एन.(1991). ए स्टडी ऑफ प्रोफेशनल एट्टीट्यूड़ ऑफ सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स ऑफ गुजरात स्टेट. फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च 1988–92. वाल्यूम(2), नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी. पृष्ठ–1494.